खण्ड-470, अंक-2
बुधवार, 22 माघ, शक संवत् 1930
(11 फरवरी, 2009 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(पंद्रहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2009)

खण्ड 470 में 9 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

2009

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क-च
विधान सभा की वर्तमान सदस्य श्रीमती अर्चना सरोज के निधन पर शोकोद्गार..	1-4
भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर0 वेंकटरामन के निधन पर शोकोद्गार ...	4-7
भारत के पूर्व प्रधान मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निधन पर शोकोद्गार	8-12

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, दिनांक 11 फरवरी, 2009

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के 11 बजे मा0 अध्यक्ष, श्री सुखदेव राजभर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई)

उपस्थित सदस्य-336

अंगद यादव, श्री	आजमगढ़
अकबर हुसैन, श्री	मुरादाबाद
अर्कीलुर्रहमान खां, श्री	मुरादाबाद
अखिलेश कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
अजय तोमर, डा0	बागपत
अजय यादव, श्री	एटा
अजय सिंह, श्री	जालौन
अनन्त मिश्रा, श्री	फर्रुखाबाद
अनिल कुमार दोहरे, श्री	कन्नौज
अनिल कुमार, श्री	बुलन्दशहर
अनिल कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
अनिल कुमार अहिरवार, श्री	महोबा
अनिल कुमार मौर्य, श्री	मिर्जापुर
अनिल कुमार सिंह यादव, श्री	एटा
अनिल चौधरी, डा0	हाथरस (महामायानगर)
अनीस अहमद खाँ उर्फ फूलबाबू, श्री	पीलीभीत
अनुग्रह नारायण सिंह, श्री	इलाहाबाद
अनूप सण्डा, श्री	सुल्तानपुर
अब्दुल कलाम, श्री	सन्तकबीरनगर
अब्दुल मन्नान, श्री	हरदोई
अब्दुल वारिस खाँ, श्री	मुजफ्फरनगर
अब्दुल समद अंसारी हाजी, श्री	वाराणसी
अब्बास अली जैदी उर्फ रूश्दी मियां, श्री	फैजाबाद
अमरमणि त्रिपाठी, श्री	महराजगंज
अमरेश कुमार शुक्ल, श्री	बाराबंकी
अम्बिका चौधरी, श्री	बलिया
अम्बिका सिंह, श्री	गोरखपुर
अमेरिका प्रधान, श्री	गाजीपुर
अयोध्या प्रसाद पाल, श्री	फतेहपुर
अरविन्द कुमार सिंह 'गोप', श्री	बाराबंकी
अरविन्द सिंह यादव, श्री	कन्नौज
अरशद खान, श्री	पीलीभीत
अरूणा तोमर, श्रीमती	कानपुर नगर
अलाउद्दीन, श्री	बलरामपुर
अलीम हाजी, श्री	बुलन्दशहर
अवध पाल सिंह यादव, श्री	एटा
अवधेश वर्मा, श्री	शाहजहाँपुर
अवधेश प्रसाद, श्री	फैजाबाद
अवनीन्द्र नाथ द्विवेदी उर्फ महन्त दुबे, श्री	महराजगंज
अवस्थी बाला प्रसाद, श्री	लखीमपुर खीरी
अशोक कुमार कंसल, श्री	मुजफ्फरनगर
अशोक कुमार राणा, श्री	बिजनौर
अशोक सिंह चौहान, श्री	मैनपुरी
आदित्य पाण्डेय, श्री	फतेहपुर
आनन्द कुमार उर्फ कलेक्टर पाण्डेय, श्री	इलाहाबाद
आर0 के0 चौधरी, श्री	लखनऊ
आर0 के0 शर्मा, पंडित	बरेली

आरिफ अनवर हाशमी, श्री	गोण्डा
आलोक कुमार शाक्य, श्री	मैनपुरी
आसिफ, श्री	हरदोई
इमरान मसूद, श्री	सहारनपुर
इरफान सोलंकी, श्री	कानपुर नगर
ईश्वर चन्द्र शुक्ल, श्री	सिद्धार्थनगर
उदयराज, श्री	उन्नाव
उदयलाल मौर्य, श्री	वाराणसी
उमेश पाण्डेय, श्री	मऊ
ओम प्रकाश सिंह, श्री	मिर्जापुर
ओम प्रकाश सिंह (ओ0पी0सिंह), श्री	सुल्तानपुर
ओमवती देवी, श्रीमती	बिजनौर
कमलेश चन्द्र दिवाकर, श्री	कानपुर देहात
काजिम अली खाँ उर्फ नवेद मियां, नवाब	रामपुर
कादिर राणा, श्री	मुजफ्फरनगर
कामेश्वर उपाध्याय, श्री	देवरिया
कालीचरन राजभर, श्री	गाजीपुर
काशीराम, श्री	रामपुर
कुबेर सिंह, श्री	एटा
कुलदीप सिंह गंगवार, श्री	फर्रूखाबाद
कुलदीप सिंह सेंगर, श्री	उन्नाव
कृपा शंकर सिंह, श्री	उन्नाव
कृष्ण कुमार, श्री	बहराइच
कृष्ण कुमार उर्फ सतीश वर्मा, श्री	हरदोई
कृष्ण गोपाल पटेल, श्री	लखीमपुर खीरी
के0 के0 सचान, डा0	जौनपुर
केदारनाथ वर्मा, श्री	बलिया
कैलाश चौरसिया, श्री	मिर्जापुर
कैलाश सिंह राजपूत, श्री	कन्नौज
कौकब हमीद खाँ, श्री	बागपत
कौशल किशोर, डा0	लखीमपुर खीरी
गजेन्द्र सिंह, श्री	बुलन्दशहर
गिरीश चन्द्र, श्री	मुरादाबाद
गुटियारी लाल दुबेश, श्री	आगरा
गुरू प्रसाद मौर्य, श्री	इलाहाबाद
गुलाम मोहम्मद खान, श्री	बहराइच
गेंदा लाल चौधरी, श्री	हाथरस (महामायानगर)
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री	लखनऊ
घूराराम, श्री	बलिया
चन्द्रदेव, श्री	आजमगढ़
चन्द्र प्रकाश मिश्र "मटियारी", श्री	सुल्तानपुर
चन्द्रवीर सिंह, श्री	मेरठ
चौधरी रविन्द्र प्रताप, श्री	सिद्धार्थनगर
छत्रपाल सिंह, श्री	बरेली
छोटे सिंह, श्री	जालौन
जगदीश नारायण, श्री	जौनपुर
जगन प्रसाद गर्ग, श्री	आगरा
जगपाल, श्री	सहारनपुर
जमीरउल्ला, श्री	अलीगढ़
जयवीर सिंह, श्री	मैनपुरी
जयवीर सिंह, ठाकुर	अलीगढ़
जसवन्त सिंह उर्फ अतुल सिंह, श्री	कुशीनगर
जावेद अंसारी, श्री	जौनपुर
जितेन्द्र कुमार एडवोकेट, श्री	चन्दौली
जितेन्द्र कुमार उर्फ नन्दू चौधरी, श्री	बस्ती
जुल्फिकार अहमद भुट्टो, श्री	आगरा
जोखू लाल यादव, श्री	इलाहाबाद

ज्योत्सना श्रीवास्तव, डा0	वाराणसी
ताहिर हुसैन सिद्दीकी, श्री	फर्रुखाबाद
तौफीक अहमद, श्री	सिद्धार्थनगर
दद्दन मिश्रा, श्री	श्रावस्ती
दद्दू प्रसाद, श्री	चित्रकूट
दयाराम, श्री	कौशाम्बी
दशरथ प्रसाद चौहान, श्री	सन्तकबीर नगर
दाउद अहमद, श्री	हरदोई
दीनानाथ कुशवाहा, श्री	देवरिया
दीनानाथ पाण्डेय, श्री	वाराणसी
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री	आजमगढ़
दूधराम, श्री	बस्ती
धनंजय सिंह, श्री	जौनपुर
धर्मपाल, श्री	गाजियाबाद
धर्मपाल यादव डी0पी0 यादव, श्री	बदायूँ
धर्मपाल सिंह, डा0	आगरा
धर्मराज निषाद, श्री	अम्बेडकरनगर
धर्म सिंह सैनी, डा0	सहारनपुर
धर्मी रावत, श्रीमती	बाराबंकी
धर्मेन्द्र कुमार कश्यप, श्री	बरेली
धीरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	बलरामपुर
धू राम लोधी, चौधरी, श्री	हमीरपुर
नकुल दुबे, श्री	लखनऊ
नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी', श्री	इलाहाबाद
नन्दिता शुक्ला, श्रीमती	गोण्डा
नरेन्द्र सिंह, श्री	सीतापुर
नाथू राम कुशवाहा 'इंजीनियर', श्री	ललितपुर
नारायण सिंह, श्री	आगरा
नितिन अग्रवाल, श्री	हरदोई
निर्मल वर्मा, श्री	सीतापुर
नीरज (कुशवाहा) मौर्य, श्री	शाहजहाँपुर
पंकज कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
पी0 के0 राय, डा0	कुशीनगर
पुरुषोत्तम नरेश द्विवेदी, श्री	बाँदा
पूजा पाल, श्रीमती	इलाहाबाद
पूरन प्रकाश, श्री	मथुरा
प्रजापालन, श्री	एटा
प्रतिभा शुक्ला, श्रीमती	कानपुर देहात
प्रदीप कुमार उर्फ गुड्डू, श्री	बदायूं
प्रदीप जैन 'आदित्य', श्री	झाँसी
प्रदीप माथुर, श्री	मथुरा
प्रमोद तिवारी, श्री	प्रतापगढ़
प्रमोद सिंह, श्री	देवरिया
प्रवीण पटेल, श्री	इलाहाबाद
फतेह बहादुर, श्री	महराजगंज
फरहत हसन, श्री	ज्योतिबाफूलेनगर
फरीद महफूज किदवई, श्री	बाराबंकी
फसीहा बशीर चौधरी (गजाला लारी), श्रीमती	देवरिया
फागू, श्री	मऊ
बलबीर, श्री	मुजफ्फरनगर
बिरजू राम, श्री	जौनपुर
बृजेश सौरभ, श्री	प्रतापगढ़
बैजनाथ दुबे, श्री	गोण्डा
ब्रम्हाशंकर त्रिपाठी, श्री	देवरिया
भगवत शरण गंगवार, श्री	बरेली
भगवती प्रसाद सागर, श्री	झाँसी
भगवान दास, श्री	सन्तकबीरनगर
भगवान सिंह कुशवाहा, श्री	आगरा
भीमराव अम्बेडकर एडवोकेट, श्री	इटावा
भोला, श्री	आजमगढ़

मंजू, श्रीमती	बलिया
मदन भैया, श्री	बागपत
मदन चौहान, श्री	गाजियाबाद
मधुसूदन शर्मा, श्री	आगरा
मनोज चौधरी, श्री	सहारनपुर
ममतेश शाक्य, श्री	एटा
मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री	रायबरेली
महिपाल सिंह, श्री	सहारनपुर
महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीन बाबू, श्री	सीतापुर
महेन्द्र सिंह, श्री	अलीगढ़
महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री	इटावा
महेश चन्द्र गुप्ता, श्री	बदायूँ
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री	सिद्धार्थनगर
माधव पासवान, श्री	गोरखपुर
मिथिलेश कुमार कठेरिया, श्री	शाहजहाँपुर
मिथलेश कटियार, श्रीमती	कानपुर देहात
मीता गौतम, कु0	बाराबंकी
मुरलीधर, श्री	फतेहपुर
मुस्लिम खाँ, श्री	बदायूँ
मोहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
मोहम्मद इकबाल, श्री	बिजनौर
मोहम्मद इरशाद खान, श्री	लखनऊ
मोहम्मद गाजी, श्री	बिजनौर
मोहम्मद जलील खान, श्री	गोण्डा
मोहम्मद जासमीर अंसारी, श्री	सीतापुर
मोहम्मद ताबीश खां, श्री	सन्तकबीरनगर
मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री	इलाहाबाद
यशपाल सिंह, श्री	बिजनौर
यशपाल सिंह चौहान, श्री	अलीगढ़
यशवन्त सिंह, डा0	मुजफ्फरनगर
यसपाल सिंह रावत, श्री	गोरखपुर
योगराज सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
योगेन्द्र सागर, श्री	बदायूँ
योगेश वर्मा, श्री	मेरठ
रघुनाथ प्रसाद संखवार, डा0	कानपुर देहात
रणवेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ धुन्नी भइया, श्री	फतेहपुर
रतनलाल अहिरवार, श्री	झाँसी
रफी अहमद उस्मानी, डा0	लखीमपुर खीरी
रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री	कुशीनगर
रमेश गौतम, श्री	गोण्डा
रमेश चन्द्र विन्द, डा0	मिर्जापुर
रविन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री	जौनपुर
राकेश कुमार गोस्वामी, श्री	महोबा
राकेश धर त्रिपाठी, डा0	इलाहाबाद
राकेश बाबू, श्री	फिरोजाबाद
राघव लखन पाल, श्री	सहारनपुर
राजकिशोर सिंह, श्री	बस्ती
राजकुमार सिंह गौतम, डा0	गाजीपुर
राजकुमार रावत, श्री	मथुरा
राजपाल त्यागी, श्री	गाजियाबाद
राजपाल सिंह, श्री	गाजियाबाद
राजबली जैसल, श्री	इलाहाबाद
राजाराम त्यागी, श्री	रायबरेली
राजीव कुमार सिंह, श्री	बाराबंकी
राजीव त्रेहन उर्फ राजीव चन्ना, श्री	मुरादाबाद
राजेन्द्र कुमार, श्री	मऊ
राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री	प्रतापगढ़
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री	बस्ती

राजेन्द्र सिंह, डा0	आगरा
राजेन्द्र सिंह उर्फ पहलवान सिंह, श्री	गोरखपुर
राजेश अग्रवाल, श्री	बरेली
राजेश कुमार, श्री	लखीमपुर खीरी
राजेश त्रिपाठी, श्री	गोरखपुर
राजेश्वरी, श्रीमती	हरदोई
राधे लाल रावत, श्री	उन्नाव
राधे श्याम गुप्ता, श्री	फतेहपुर
राधेश्याम जायसवाल, श्री	सीतापुर
राम अचल राजभर, श्री	अम्बेडकरनगर
राम किशुन, श्री	चन्दौली
राम कुमार तिवारी, पण्डित	ललितपुर
रामपाल राजवंशी, श्री	सीतापुर
रामपाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम प्रकाश कुशवाहा, श्री	कानपुर नगर
राम प्रकाश यादव, श्री	फिरोजाबाद
राम प्रसाद चौधरी, श्री	बस्ती
राम प्रसाद जायसवाल, श्री	देवरिया
राम बिशुन आजाद, श्री	गोण्डा
रामवीर उपाध्याय, श्री	हाथरस
राम शिरोमणि शुक्ल, श्री	प्रतापगढ़
राम सागर अकेला, श्री	श्रावस्ती
राम सिंह, डा0	अलीगढ़
रामसेवक, श्री	सुल्तानपुर
राम सेवक सिंह पटेल, श्री	बदायूँ
रामहेत भारती, श्री	सीतापुर
रिजवान अहमद खाँ, श्री	ज्योतिबाफूलेनगर
रियाज अहमद, श्री	पीलीभीत
रोशन लाल वर्मा, श्री	शाहजहाँपुर
लखीराम नागर, श्री	मेरठ
लालजी टंडन, श्री	लखनऊ
लाल जी यादव, श्री	सिद्धार्थनगर
लाल जी वर्मा, श्री	अम्बेडकरनगर
वकार अहमद शाह, डा0	बहराइच
वाचस्पति, श्री	कौशाम्बी
वारिस अली, श्री	बहराइच
वासुदेव सिंह "बाबा", श्री	बुलन्दशहर
विजय कुमार, श्री	गाजीपुर
विजय कुमार उर्फ विजय यादव, श्री	मुरादाबाद
विजय कुमार मिश्र, श्री	सन्त रविदासनगर (भदोही)
विजय पाल सिंह, श्री	बरेली
विजय बहादुर यादव, श्री	गोरखपुर
विद्या चौधरी, श्रीमती	आजमगढ़
विद्यासागर गुप्त, श्री	लखनऊ
विनोद सिंह, श्री	सुल्तानपुर
विनोद कुमार हरित, श्री	मेरठ
विनोद चतुर्वेदी, श्री	जालौन
विवेक कुमार सिंह, श्री	बांदा
विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री	बांदा
विशम्भर सिंह यादव, श्री	बांदा
विश्वनाथ, श्री	कुशीनगर
वीरेन्द्र सिंह, श्री	बरेली
वीरेन्द्र सिंह सिरोही, श्री	बुलन्दशहर
वेदराम भाटी, श्री	बुलन्दशहर
वृज सिंह उर्फ वृज कुंवरि, श्रीमती	गोण्डा
शब्बीर अहमद, श्री	बहराइच
शहजिल इस्लाम अंसारी, श्री	बरेली
शारदा प्रसाद, श्री	चन्दौली
शहनवाज, श्री	बिजनौर

शिव गणेश लोधी, श्री	रायबरेली
शिवपाल सिंह यादव, श्री	इटावा
शिवबालक पासी, श्री	रायबरेली
शिवशंकर, श्री	बलिया
शीशराम, श्री	बिजनौर
शेख नसीरउद्दीन सिद्दीकी, श्री	फिरोजाबाद
शेरबहादुर, श्री	अम्बेडकरनगर
शैलेन्द्र यादव 'ललई', श्री	जौनपुर
श्यामदेव राय चौधरी, श्री (दादा)	वाराणसी
श्याम नरायण यादव, श्री	आजमगढ़
श्याम लाल, श्री	बलरामपुर
श्याम सुन्दर शर्मा, श्री	मथुरा
श्रीपति आजाद, श्री	महराजगंज
संग्राम सिंह, श्री	बाराबंकी
संजय कुमार त्रिपाठी, श्री	प्रतापगढ़
संजय कपूर, श्री	रामपुर
संजीव दरियाबादी,"बन्टी", श्री	कानपुर नगर
संदीप अग्रवाल, श्री	मुरादाबाद
संध्या, कुमारी	मैनपुरी
सत्य नारायण जैसल, श्री	सोनभद्र
सत्यपाल सिंह, चौ0	अलीगढ़
सत्यवीर सिंह गुर्जर, श्री	गौतमबुद्धनगर
सत्येन्द्र सोलंकी, चौ0	बागपत
सदल प्रसाद, श्री	गोरखपुर
सनातन पाण्डेय, श्री	बलिया
सर्वेश कुमार सिंह सीपू, श्री	आजमगढ़
सिनोद कुमार शाक्य, श्री	बदायूं
सिवगतुल्लाह अंसारी, श्री	गाजीपुर
सी0 एम0 प्रसाद, श्री	सोनभद्र
सी0 वी0 इन्निस, श्री	नाम-निर्देशित
सुखदेव प्रसाद वर्मा, श्री	फतेहपुर
सुखदेव राजभर, श्री	आजमगढ़
सुखलाल, श्री	पीलीभीत
सुन्दर लाल लोधी, श्री	उन्नाव
सुन्दर सिंह, श्री	बुलन्दशहर
सुभाष, श्री	बलिया
सुभाष पाण्डेय, श्री	जौनपुर
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री	आजमगढ़
सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री	वाराणसी
सुरेश तिवारी, श्री	देवरिया
सुरेश कुमार खन्ना, श्री	शाहजहांपुर
सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री	लखनऊ
सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री	लखनऊ
सुरेश्वर सिंह, श्री	बहराइच
सुल्तान बेग, श्री	बरेली
सुशील कुमार, श्री	चन्दौली
सूरजपाल सिंह ठाकुर, श्री	आगरा
सूरज सिंह शाक्य, श्री	एटा
सूर्यभान, श्री	मिर्जापुर
सोबरन सिंह, श्री	मैनपुरी
हरगोविन्द भार्गव, डा0	सीतापुर
हरपाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
हरिओम, श्री	जालौन
हसरत उल्ला, श्री	एटा
होराम सिंह, श्री	गौतमबुद्धनगर

नोट :-मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती) एवं भूतत्व एवं खनिकर्म तथा पंचायती राज मंत्री (श्री बाबू सिंह कुशवाहा) भी सदन में उपस्थित थे।

विधान सभा की वर्तमान सदस्य श्रीमती अर्चना सरोज के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)-

माननीय अध्यक्ष जी, उत्तर प्रदेश की वर्तमान विधान सभा की सदस्य श्रीमती अर्चना सरोज का 6 अक्टूबर सन् 2008 को लम्बी एवं गम्भीर बीमारी होने के कारण निधन हो गया । वह लगभग 38 वर्ष की थी। इनका जन्म 27 मई सन् 1970 को ग्राम गोधना जिला मिर्जापुर में हुआ था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी0ए0 तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से एम0ए0 की डिग्री प्राप्त की थी। श्रीमती अर्चना सरोज वर्ष 2007 में निर्वाचन क्षेत्र भदोही रिजर्व सीट से, जिला सन्त रविदास नगर से बहुजन समाज के टिकट पर पहली बार विधान सभा की सदस्य निर्वाचित हुई थी। यह हमारी पार्टी की काफी सोशल विधायक थीं और राजनीति में आकर यह अपने क्षेत्र में सर्व समाज में से गरीब, पीड़ित एवं उपेक्षित वर्गों की सेवा करना चाहती थी साथ ही उनकी बाबा साहब डा0 अम्बेडकर की विचारधारा में खास आस्था थी। इनके निधन से प्रदेश ने बाबा साहब डा0 अम्बेडकर के एक अनुयायी एवं बहुजन समाज सेवा के प्रभावशाली कार्यकर्ता को खो दिया है। मान्यवर, मेरा अनुरोध है कि श्रीमती अर्चना सरोज के निधन पर हमारी व सदन की ओर से शोक-संवेदनायें उनकी दुखी परिवारजन तक पहुंचाने का का कष्ट करें।

*श्री अम्बिका चौधरी-

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन ने श्रीमती अर्चना सरोज के सम्बन्ध में जो विचार सदन में रखे हैं मैं और मेरा दल उससे अपने को सम्बद्ध करता है। माननीय अध्यक्ष जी, पहली बार इस सम्मानित सदन में चुनकर आने के बावजूद जो उनकी राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियां थीं उसकी लम्बी पृष्ठ भूमि है।

एक राजनैतिक परिवार में उनका जन्म हुआ था तथा समाजसेवा उनको विरासत में मिली थी। व्यक्तिगत रूप से मेरा उनसे बहुत पुराना परिचय था, जब बलिया जनपद में उनके पति शासकीय सेवा में, बिजली विभाग में पदारूढ़ थे। एक सरकारी अधिकारी की पत्नी होने के बावजूद भी अनेक सामाजिक गतिविधियों में वह सेवारत रहती थी, उनकी समाज सेवा में बहुत रुचि थी और बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य के रूप में चुनकर आने के बाद उन्होंने जो काम किया है, उनकी जो रुचियां थीं, इस सदन में इतने अल्पकाल तक सेवा कर पाने के बावजूद भी हम सब उनसे परिचित हुए। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। इतनी कम अवस्था में, अल्पायु में एक ऐसे समाजसेवी का चला जाना, एक बड़ा आघात है। यह मात्र बहुजन समाज पार्टी की ही नहीं, पूरे सदन की और समाज की क्षति है। आज मैं समाजवादी पार्टी की तरफ से उनके निधन पर शोक व्यक्त करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी और हमारी पार्टी की ओर से शोक-संवेदना उनके दुखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री ओम प्रकाश सिंह-

मान्यवर, इस सदन के लिये और कमजोर समाज के लिये अत्यन्त दुखद समाचार है। मा0 नेता सदन ने, मा0 नेता समाजवादी पार्टी ने जो विचार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। आना और जाना, माना कि एक प्रकृति का नियम है लेकिन किसी ने अल्प आयु में ही समाज सेवा का व्रत लिया हो और राजनैतिक पृष्ठभूमि का हो, गरीब उपेक्षित समाज से हो, यह और भी दुखद् है कि वह अल्पायु में इस दुनिया से चला गया, उसकी मृत्यु हो गई। श्रीमती अर्चना सरोज निश्चित रूप से अल्पायु में समाजसेवा का व्रत लेकर और जनता का विश्वास प्राप्त करके इस सम्मानित सदन की सदस्य चुनी गई। यह निश्चित रूप से उनकी प्रतिभा, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उसके प्रभाव का परिणाम था। वह सक्रिय रूप से समाज सेवा में लगी हुई थी, समाज की सेवा करने का उनका व्रत था और विशेष रूप से उस व्यक्ति, उस प्राणी का जो समाज के कमजोर तबके, गरीब तबके, उपेक्षित और पीड़ित वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा हो और सेवा का व्रत लिया हो, यह सामान्य स्थिति नहीं है, सामान्य परिस्थिति नहीं है। ऐसे सेवाव्रती का अल्पकाल में चले जाना और भी दुखद् है। इसलिये मैं उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करता हूं और उनके दुखी परिवार को यह दुख सहन करने की भगवान क्षमता प्रदान करें, यह कामना करता हूं। आपसे आग्रह है कि मेरी और मेरे दल की उनकी आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना और उनके दुखी परिवार तक हमारी संवेदना भेजने का कष्ट करें।

*श्री प्रमोद तिवारी-

मा0 अध्यक्ष महोदय, श्रीमती अर्चना सरोज जी के निधन पर जो विचार नेता सदन मा0 मुख्य मंत्री जी ने, नेता समाजवादी पार्टी, चौधरी साहब ने, भारतीय जनता पार्टी के नेता, श्री ओम प्रकाश जी ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने आप को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, 6 अक्टूबर को यह हृदय विदारक समाचार मुझे इलाहाबाद में मिला तो मैं स्तब्ध रह गया क्योंकि उनके पिता श्री राम निहोर राकेश जो कांग्रेस से तीन बार चायल से सांसद रहे हैं, मैं उनके परिवार को बहुत नजदीक से जानता था। यद्यपि वह एक गम्भीर बीमारी से लम्बे समय तक पीड़ित रहीं थीं पर जिस तरह से उत्तर प्रदेश सरकार उनका निदान-उपचार करा रही थी मुझे पूरा विश्वास था कि वह इससे निकल आयेंगी। वह बहुत कम समय तक विधान सभा की सदस्य रहीं लेकिन वह सभी जो विधान सभा की कार्यवाही में हिस्सा लेते हैं वह उनसे प्रभावित थे, जिस तरह से श्रीमती अर्चना सरोज जी ने अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी थी। मान्यवर, जन्म से ही विरासत में उनके परिवार में दो सांसद थे। एक पिता श्री राम निहोर राकेश जी इलाहाबाद से और एक निकटतम संबंधी मिर्जापुर से थे तो राजनीति उन्हें विरासत में मिली थी। फिर उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की थी, वह

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सामाजिक विचारधारा से ओतप्रोत थीं। अनन्त सम्भावनायें उनका इंतजार कर रही थीं लेकिन काल ने उन्हें हमसे छीन लिया। प्रकृति का नियम है कि जो आता है उसे जाना पड़ता है लेकिन अगर इस आयु में कोई चला जाये तो वह बहुत हृदय विदारक होता है। चूंकि मेरे दल से उनके परिवार का व्यक्तिगत नाता रहा है तो मैं अपने दल की ओर से और सभी की ओर से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी यह भावनायें उनके परिवारजनों तक और उस निर्वाचन क्षेत्र जहां से वह निर्वाचित हुई थीं उनके लाखों शुभचिंतकों तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री कौकब हमीद खां-

मान्यवर, माननीया मुख्य मंत्री जी ने, नेता समाजवादी पार्टी ने, नेता भाजपा ने और नेता कांग्रेस ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। श्रीमती अर्चना सरोज यहां पहली बार जीतकर आई थीं और जिस तरह से उन्होंने अपने क्षेत्र में काम करना शुरू किया था उनके न रहने से यकीनी तौर पर आने वाले समय में एक खालीपन रह जाएगा और उस खालीपन को पूरा नहीं किया जा सकता। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी और मेरे दल की ओर से उनके परिवारजनों को हमारी भावनायें पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री आर0के0 चौधरी-

मान्यवर, श्रीमती अर्चना सरोज का निधन दुखद घटना है और उनके निधन से सम्पूर्ण सदन दुखी है और उनका पूरा परिवार और उनका पूरा क्षेत्र भदोही दुखी है। वह एक राजनैतिक परिवार से थीं। उनके पिता श्री राम निहोर राकेश आज भी एक कद्दावर नेता हैं मैं उनके निधन की सूचना पाते ही उनके घर, गांव मोलानापुर, जिला जौनपुर गया था। इस घटना से उनका पूरा गांव सदमें में था और शोक में डूबा हुआ था। इस मौके पर माननीय नेता सदन ने और दलीय नेताओं ने जो उद्गार और अपनी शोक-संवेदनायें व्यक्त की हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष-

उत्तर प्रदेश की वर्तमान विधान सभा की सदस्य, श्रीमती अर्चना सरोज का 06 अक्टूबर, 2008 को निधन हो गया वे लगभग 38 वर्ष की थीं। श्रीमती अर्चना सरोज का जन्म 27 मई, 1970 को गोधना, जिला मिर्जापुर में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री ग्रहण की थी। श्रीमती अर्चना सरोज वर्ष 2007 में निर्वाचन क्षेत्र भदोही (अ0जा0) जिला सन्त रविदास नगर से बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुई थीं।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्रीमती अर्जना सरोज महिला कल्याण समिति की अध्यक्ष थीं। उन्होंने अम्बेडकर मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य किया। राजनीति, समाज सेवा, अध्ययन पेन्टिंग तथा ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण में उनकी रुचि थी। श्रीमती अर्चना सरोज के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

कृपया मृतक की आत्मा की शान्ति के लिये आप सब अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण करें।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए।)

अब आप सब कृपया स्थान ग्रहण करने का कष्ट करें।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर0 वेंकटरामन के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)-

माननीय अध्यक्ष जी, देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर0 वेंकटरामन का निधन पिछले महीने 27 जनवरी, 2009 को हो गया था। वह लगभग 98 वर्ष के थे, इनका जन्म 04 दिसम्बर, 1910 को तमिलनाडु स्टेट के जिला तंजौर में हुआ था। यह काफी विद्वान, सामाजिक एवं कुशल राजनीतिक तथा देश प्रेमी भी थे और इन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में भी भाग लिया था। वह अन्तरिम संसद के सदस्य तथा पहली, दूसरी, छठी एवं सातवीं लोक सभा के सदस्य भी रहे हैं। वर्ष 1957 से 1967 तक वह मद्रास विधान परिषद् के नेता सदन रहे हैं तथा इस दौरान वे वहां विभिन्न विभागों के मंत्री भी रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार के वित्त, रक्षा तथा गृह मंत्री के रूप में भी कार्य किया है। मान्यवर, श्री वेंकटरामन 31 अगस्त, 1984 से 24 जुलाई, 1987 तक भारत के उप राष्ट्रपति तथा 25 जुलाई, 1987 से 25 जुलाई, 1992 तक भारत के राष्ट्रपति पद पर रहे हैं। खासतौर से लेखन, कला और संस्कृति में उनकी विशेष रुचि रही है। उनके निधन से देश ने एक प्रख्यात कानूनविद्, कुशल प्रशासक एवं प्रखर राजनेता खो दिया है। मान्यवर, मेरा अनुरोध है कि श्री आर0 वेंकटरामन के निधन पर हमारी एवं सभी की ओर से शोक-संवेदनायें उनके दुःखी परिवारजन तक भिजवाने का कष्ट करें।

*श्री अम्बिका चौधरी-

माननीय अध्यक्ष जी, पूर्व राष्ट्रापति आर0 वेंकटरामन जी के सम्बन्ध में जो विचार माननीय नेता सदन ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने आजादी की लड़ाई में भी हिस्सा लिया हो, जो संविधान सभा का सदस्य भी रहा हो, जो प्रदेश की राजनीति में भी महत्वपूर्ण पदों पर स्थापित रहा हो और केन्द्रीय सरकार में अनेक पदों पर रक्षा, गृह, वित्त इस प्रकार अनेक पदों को सुशोभित करते हुए और पुनः मान्यवर, उप राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति के बाद राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुआ हो और जिसके पूरे जीवन के आचरण में सदैव यह बात परिलक्षित होती रही कि संविधान सभा के सदस्य होने के नाते नियमों के

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

प्रति आदर का भाव जो उनमें शुरुआत में पैदा हुआ वह जीवन के आखिर तक रहा । मान्यवर, लेकिन बदलाव की जो परिस्थितियां उनके सम्मुख आती गईं, उन परिस्थितियों से तालमेल करने का उनमें अद्भुत कौशल था और यह बातें उनके व्यक्तित्व में सदैव परिलक्षित होती रहीं। मान्यवर, राष्ट्रपति के पद पर रहकर उन्होंने तीन प्रधान मंत्रियों को शपथ दिलाई। उन्होंने श्री बी0पी0 सिंह जी, श्री चन्द्रशेखर जी तथा श्री नरसिम्हा राव जी को शपथ दिलाई और प्रकारान्तर में विभिन्न दलों से सम्बद्ध इन प्रधान मंत्रियों के साथ राष्ट्रपति के तौर पर काम किया। मान्यवर, राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च और संवैधानिक पद के प्रति जो उनकी दृष्टि थी और उस पर रहकर जिस तरह से उन्होंने कार्य किया वह एक मिसाल थे। मान्यवर, वह एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और आज उस पीढ़ी का लगभग आखिरी व्यक्तित्व हमारे बीच से विदा हो गया है। वह जीवन के हर क्षेत्र में एक प्रकाश स्तम्भ की तरह खड़े रहे और समाज को राह दिखाते रहे। आज हमें उनकी बहुत आवश्यकता थी। उनके जाने से देश को बहुत बड़ी क्षति हुई है। उनके निधन पर माननीय नेता सदन ने जो विचार व्यक्त किये हैं उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मेरा अनुरोध है कि उनके प्रति हमारी और हमारे दल की यह शोक-संवेदनायें उनके दुखी परिवारजन तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री ओम प्रकाश सिंह-

मान्यवर, पूर्व राष्ट्रपति श्री आर0 वेंकटरामन जी के निधन पर मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं। मान्यवर, उनके निधन पर जो विचार माननीय नेता सदन और माननीय नेता समाजवादी पार्टी ने व्यक्त किये हैं और उनके जीवन के विस्तृत क्रियाकलापों के बारे में जो कहा है उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, श्री आर0 वेंकटरामन जी का पूरा जीवन देश और समाज के लिये समर्पित था। इनका एक संघर्षमय जीवन था और यह उस परम्परा के महान लोगों में से थे जिन्होंने सामान्य समाज से उठकर देश के सर्वोच्च पद को अपनी योग्यता और प्रतिभा के आधार पर ग्रहण किया। मान्यवर, निधन तो सभी का होना है लेकिन वेंकटरामन जी उस परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे जिन्होंने राजनीति में शुचिता और आदर्श की स्थापना में अपना पूरा योगदान किया था। मान्यवर, स्वतंत्रता संग्राम के जो लोग शेष बचे हुए हैं उसकी वह एक कड़ी थे। जिनका पूरा जीवन शुचिता, सादगी और नैतिकता में बीता। उनका जीवन एक सामान्य क्षति नहीं है, सामान्य जीवन से बड़े पद पर पहुंचने वाले व्यक्ति की भी क्षति नहीं है बल्कि प्रेरणा के एक स्तम्भ की क्षति है, जो समाज को राजनीति को, एक शुचिता, आदर्श और नैतिकता का प्रकाश देते रहे, दिशा देते रहे, उन स्तम्भों में से वह एक थे। इसलिये उनके निधन से देश की, देश के इतिहास की, राजनीति की और राजनीति के प्रेरणास्रोत की क्षति है और यह क्षति निश्चित रूप से एक सामान्य क्षति नहीं है बल्कि एक वास्तविक अपूरणीय क्षति है। मान्यवर, उनके जाने के बाद हमारे प्रेरणा के केन्द्र समाप्त हो रहे हैं जिन्होंने जीवन और समाज के समक्ष एक आदर्श स्थापित किया और उन पदचिन्हों पर चलने योग्य बनाया उनका निधन उस परम्परा की एक क्षति है,

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

यह देश की एक बहुत बड़ी क्षति है। मान्यवर, वह प्रारम्भ से ही समाज में बहुत संघर्ष करते रहे थे। उनका पूरा जीवन समाज के प्रति समर्पित था और श्रमिक कल्याण के प्रति विशेष समर्पित था तथा अंतिम समय तक संघर्ष करते हुए वह हम सबसे अलग हो गये। हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं और अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं। आपसे यह अनुरोध है कि कृपया हमारी यह शोक-संवेदनायें उनके शोकाकुल परिवारजन तक भिजवाने का कष्ट करें, यह आग्रह है।

*श्री प्रमोद तिवारी-

माननीय अध्यक्ष जी, श्री आर0 वेंकटरामन जी का जीवन परिचय देखने के बाद किसी को भी रश्क हो सकता है। उनका जीवन हर क्षेत्र में सफलता के शिखर तक पहुंचा। जीवन के वह 98 वर्ष तक जीवित रहे। लगभग शताब्दी के करीब पहुंचकर उनका निधन हुआ। मान्यवर, जीवन उन्होंने शुरू किया एक आजादी के योद्धा के रूप में फिर वह एक कानूनविद् के रूप में तत्कालीन मद्रास और अबके तमिलनाडु के हाईकोर्ट में एक प्रखर अधिवक्ता के रूप में जाने गये। मान्यवर, कोई ऐसा पद नहीं था उस समय मद्रास की सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालय जिसके वह मंत्री नहीं रहे, विधान परिषद् में कांग्रेस की ओर से वह दल के नेता रहे फिर मान्यवर, भारत सरकार में तीन महत्वपूर्ण पद गृह विभाग, रक्षा विभाग और वित्त विभाग तीनों महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे। उसके बाद सर्वाधिक उनके लिये जीवन का वह काल आया जो सम्भवतः एक राष्ट्रपति के जीवन काल में भारत में नहीं आया है। 5 वर्ष के कार्यकाल में 4 प्रधान मंत्री जिनके साथ उन्होंने कार्य किया श्री राजीव गांधी जी के साथ, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के साथ श्री चन्द्रशेखर जी के साथ और बाद में श्री नरसिम्हाराव जी के साथ। मान्यवर, यह संवैधानिक परीक्षा की घड़ियां होती है जब कुशल रूप से, निर्विवाद रूप से, बिना कोई उंगली उठे हुए सत्ता का परिवर्तन हो और उस समय राष्ट्रपति संवैधानिक दायित्वों का भरपूर निर्वहन करे कि कड़ा से कड़ा विरोधी भी उंगली न उठा सके, उन्होंने वह छवि उस समय प्रस्तुत की थी। मान्यवर, स्वर्णिम काल था उनका, भारत के योग्य राष्ट्रपतियों की श्रृंखला में वह योग्यतम राष्ट्रपतियों में से एक थे। मैं और मेरा दल उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों तक अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए उसे पहुंचाने का अनुरोध आपसे करता हूं।

*श्री कौकब हमीद खां-

मान्यवर, श्री आर0 वेंकटरामन जी इस देश के सिर्फ राष्ट्रपति नहीं थे वह इस देश के उन महान नेताओं में से थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में देश को आजाद कराया और उन चन्द चिरागों में थे जो अब बुझ गये और यह भी सही बात है कि कम लोग होंगे जो इस शीर्ष तक पहुंच पाते हैं। एम0एल0सी0 से लेकर परिषद् के नेता से लेकर फिर भारत सरकार में मान्यवर, तीन महत्वपूर्ण मंत्रालय उसके बाद उप राष्ट्रपति, राष्ट्रपति का होना मान्यवर, यह एक बड़ी चुनौती भी होती

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

है जीवन की और जब कामयाबी हो जाती है तो उसकी खुशी भी होती है। उनका न रहना और हमारे बीच से हटना हमेशा याद रहेगा। उनका जो कार्य है, हमेशा हिन्दुस्तान के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में रहेगा, मैं चाहूंगा कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से संवेदना उनके परिवार को भेज दी जायें।

*श्री आर0 के0 चौधरी-

मान्यवर, पूर्व राष्ट्रपति आर0 वेंकटरामन के निधन से राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है। वह हमारे राष्ट्रनायक थे और भारत छोड़ो आन्दोलन में उनकी अहम भूमिका रही है। अपने जीवन में उन्होंने पूरे देश में विभिन्न पदों पर अलग-अलग समय पर रहकर देश सेवा की है। मान्यवर, वह अंतरिम संसद के सदस्य थे इसके अलावा 4 बार लोकसभा सदस्य थे। उनके निधन से पूरे देश को गहरा धक्का लगा है। हमारे देश ने ऐसा राष्ट्रनायक खो दिया है जिसकी भरपाई सम्भव नहीं है। मान्यवर, मैं नेता सदन और दलीय नेताओं के दुखभरे उद्गार से अपनी संवेदना को जोड़ते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी शोक-संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष-

देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर0 वेंकटरामन का 27 जनवरी, 2009 को निधन हो गया वे लगभग 98 वर्ष के थे।

श्री आर0 वेंकटरामन का जन्म 4 दिसम्बर, 1910 को जिला तंजौर, तमिलनाडु में हुआ था। उन्होंने एम0ए0 तथा बी0एल0 की शिक्षा ग्रहण की थी।

श्री आर0 वेंकटरामन ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था तथा भारत रक्षा नियमों के अन्तर्गत नजरबंद रहे। वे अंतरिम संसद के सदस्य तथा पहली, दूसरी, छठी एवं सातवीं लोकसभा के सदस्य थे। वे वर्ष 1957 से 1967 तक मद्रास विधान परिषद् के नेता सदन रहे थे तथा इस दौरान वे वहां उद्योग, श्रम, सहकारिता, विद्युत, परिवहन और वाणिज्यिक कर मंत्री रहे थे। उन्होंने भारत सरकार के वित्त, रक्षा तथा गृह मंत्रालयों का कार्यभार संभाला था। वे 31 अगस्त, 1984 से 24 जुलाई, 1987 तक भारत के उप राष्ट्रपति तथा 25 जुलाई, 1987 से 25 जुलाई, 1992 तक भारत के राष्ट्रपति पद पर रहे। वे 'लेबर ला जनरल' के प्रबन्ध सम्पादक थे तथा उन्होंने 'माई प्रेसिडेंशियल इयर्स' नामक किताब भी लिखी थी। कला संगीत और संस्कृति में उनकी विशेष रुचि थी।

श्री आर0 वेंकटरामन के निधन से देश ने स्वतंत्रता आन्दोलन का महान योद्धा, प्रख्यात कानूनविद, कुशल प्रशासक एवं प्रखर राजनेता खो दिया।

श्री अध्यक्ष-

कृपया सभी माननीय सदस्यगण दो मिनट मौन के लिये खड़े हो जायं।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये सभी सदस्य दो मिनट खड़े हुए।)

कृपया स्थान ग्रहण करें।

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)-

माननीय अध्यक्ष जी, देश के पूर्व प्रधान मंत्री एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री रहे श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का 27 नवम्बर, 2008 को निधन हो गया था। वह लगभग 77 वर्ष के थे उनका जन्म 25 जून, 1931 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने बी0ए0, एम0एस0सी0 तथा एल0एल0बी0 की शिक्षा प्राप्त की थी।

इसके साथ ही वह छात्र जीवन से ही राजनैतिक रूप से काफी सक्रिय रहे। इसके अलावा वह सामाजिक प्रकृति के व्यक्ति थे। श्री वी0पी0 सिंह वर्ष 1969 तथा जून, 1981 में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वह पांचवीं, सातवीं, नवीं तथा दसवीं लोक सभा के सदस्य थे। वह नवम्बर, 1980 से जून, 1981 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के तथा 23 जुलाई, 1983 से 2 अप्रैल, 1988 तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे थे।

इसके साथ ही श्री वी0पी0 सिंह 9 जून, 1980 से 18 जुलाई, 1982 तक उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे। उन्होंने केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में भी कई महत्वपूर्ण विभागों का कार्यभार संभाला था और 2 दिसम्बर, 1989 से 10 नवम्बर, 1990 तक देश के प्रधान मंत्री रहे। उन्होंने जन चेतना मंच, किसान मंच तथा जनमोर्चा की स्थापना की। माननीय अध्यक्ष जी, श्री वी0पी0 सिंह के निधन से देश ने कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया है।

मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि श्री वी0पी0 सिंह के निधन पर हमारी व सदन की ओर से शोक-संवेदनायें उनके दुखी परिवारजन तक भिजवाने का कष्ट करें।

*श्री अम्बिका चौधरी-

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के बारे में जो विचार नेता सदन ने व्यक्त किये हैं उससे हमारा दल अपने को सम्बद्ध करता है। अध्यक्ष जी, स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह इस सम्मानित सदन के सम्मानित सदस्य थे, इस सदन के नेता की कुर्सी पर भी वह आसीन रहे, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे और देश के प्रधान मंत्री भी रहे किन्तु इन राजनीतिक बड़े पदों के परिचय के अतिरिक्त उनका व्यक्तित्व अपने आप में एक अनूठा व्यक्तित्व रहा है। राजा और फकीर दोनों तत्व एक साथ उनके अन्दर सदैव विद्यमान रहे। मा0 अध्यक्ष जी, भूदान यज्ञ में जिस प्रकार से अपनी युवा अवस्था में ही उन्होंने अपनी जमीन का काफी बड़ा हिस्सा दान करके गरीब लोगों के उत्थान में लगाने का काम किया वह उनके व्यक्तित्व का केवल एक पहलू है। वह न केवल एक राजनीतिज्ञ थे बल्कि एक संवेदनशील कवि थे, वह एक अच्छे चित्रकार भी थे और कई बार उनके व्यक्तित्व का यह अंश उनकी कार्य-प्रणाली में झांकता हुआ भी नजर आया। उनके प्रशासनिक जीवन में

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भी कई बार ऐसा लगता था कि उनका कवि हृदय उनके प्रशासनिक जीवन पर भी हावी रहा है। स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने देश के प्रधान मंत्री रहते हुए 1990 में मण्डल कमीशन की सिफारिशें लागू करके भारत की राजनीति में इतना बड़ा कदम उठाया कि हजारों सालों से जो वंचित पिछड़े लोगों की लड़ाई चली आ रही थी उन पिछड़ी जातियों के लोगों के लिये मण्डल कमीशन की सिफारिशें लागू करके उन्होंने एक अनूठा कार्य किया और इसकी गूंज आगे आने वाले सालों तक कायम रहेगी। मा0 अध्यक्ष जी, कोई स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह जी से सहमत हो या असहमत हो, राजनीतिक कारणों से कोई उनके साथ रहे या न रहे लेकिन अपने जीवन के आखिरी क्षणों तक सही बात को सही बात कहने का अद्भुत साहस उनके पास था। लम्बे समय तक स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद भी जब-जब वह इस योग्य अपने को पाते थे तो वह ऐसे लोगों की समस्याओं की लड़ाई लड़ने के लिये वह अगली कतार में आकर खड़े हो जाते थे, जिसके लिये दूसरे लोग कठिनाई से साहस जुटा पाते थे। जीवन के आखिरी दिनों में भी उन्होंने झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले लोगों के लिये लड़ाई लड़कर अनेक संघर्ष किये। वित्त मंत्री की हैसियत से जहां एक ओर आर्थिक उदारीकरण के कुछ कदमों की उन्होंने शुरुआत की वहीं बड़े उद्योगपतियों को भ्रष्टाचार और दूसरे आरोपों में जेल भेजने का काम भी उन्होंने किया। बड़ा अजीब अद्भुत व्यक्तित्व था स्वर्गीय राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह जी का, भले ही आज वह हम लोगों के बीच में नहीं हैं लेकिन राजनीति में जो शुचिता, पारदर्शिता और संकल्प का प्रतिपादन उन्होंने किया वह आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रकाश देती रहेगी। हम पुनः उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे अनुरोध करते हैं कि उनके दुःखी परिवारीजनों तक हमारे दल की ओर से शोक-संवेदनायें भेजने का कष्ट करें।

*श्री ओम प्रकाश सिंह-

माननीय अध्यक्ष जी, पूर्व प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को यह सदन और इस प्रदेश का बच्चा-बच्चा जानता है। उनके स्वतंत्र विचार, उनका संघर्षशील जीवन और भौतिक त्याग उनके जीवन की विशेषता थी उसको भी यह समाज जानता है। माननीय नेता सदन और उप नेता, समाजवादी पार्टी ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में जो संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है और उनके गुणों के प्रति जो भावनायें व्यक्त की हैं उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, मैं एक बात जरूर कहूंगा कि पदों पर बहुत से लोग रह चुके हैं और आगे भी रहेंगे लेकिन इतिहास बिरले लोग बनाते हैं। दलित उत्थान के लिये, दलित चेतना के लिये कुछ महापुरुष सदियों तक जाने जायेंगे या जब तक भारत रहेगा तब तक जाने जायेंगे।

इसी तरह से सामाजिक न्याय के लिये, इस देश के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिये जब तक यह देश चर्चा करेगा विश्वनाथ प्रताप सिंह जाने जायेंगे। सामाजिक न्याय के प्रणेता के रूप में समाज के पिछड़े वर्ग को न्याय की चेतना जगाने, न्याय के लिये संघर्ष का अधिकारबोध जगाने और उन्हें दिलाने

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

का जो इतिहास लिखा वह विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने लिखा। इसलिये वह सामाजिक न्याय के लिये सदैव जाने जायेंगे। वह स्वतंत्र विचार के थे इसलिये उनके विचारों से मत-भिन्नता के अवसर भी बहुत आये, विवाद भी बहुत खड़े हुए, विरोध भी बहुत खड़े हुए लेकिन सामाजिक न्याय के प्रश्न पर उन्होंने समझौता नहीं किया। इसलिये इस योग्यता के लिये, महानता के लिये पूरा पिछड़ा वर्ग समाज उनके प्रति नतमस्तक है। मैं उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी और मेरे दल की ओर से शोक-संवेदनायें उनके दुःखी परिवार तक भेजने की कृपा करें।

*श्री प्रमोद तिवारी-

माननीय नेता सदन, उप नेता समाजवादी पार्टी के अम्बिका चौधरी जी, नेता, भारतीय जनता पार्टी श्री ओम प्रकाश सिंह जी द्वारा श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के निधन पर जो शोक-संवेदनायें व्यक्त की गई हैं मैं उससे अपने आप को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, इलाहाबाद उनकी जन्मभूमि और कर्मभूमि भी रही है। सम्भवतः बी0ए0 और बी0एस0सी0 करने वाले बिरले लोगों में से वह एक थे और बहुत कम लोगों को यह अवसर मिलता है। वह विधान परिषद्, विधान सभा, राज्य सभा और लोक सभा में भी रहे और बहुत ही बिरले लोगों को चारों सदनों का सदस्य रहने का अवसर मिलता है। प्रधान मंत्री के रूप में यद्यपि उनका अल्पकाल रहा लेकिन उन्होंने अपना सराहनीय योगदान दिया। जब 1980 में मैं पहली बार निर्वाचित होकर के आया तो वह मुख्य मंत्री थे। मुख्य मंत्री के रूप में मैंने उन्हें सदन में कार्य करते देखा है। मैं उस क्षण और पल का भी साक्षी हूं जब उनके बड़े भाई जो जस्टिस थे उनकी हत्या बांदा के जंगलों में एक डाकू दल द्वारा कर दी गई थी। उससे व्यथित होकर उन्होंने डाकू उन्मूलन का अभियान चलाया था और यह प्रतिज्ञा की थी कि एक महीने के अन्दर डाकुओं का उन्मूलन कर देंगे और जब यह काम पूरा नहीं हो पाया तो 30 दिन बाद उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया था। उनका जीवन बहुत उपलब्धियों से भरा था। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उनके परिवारीजन तक मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री कौकब हमीद खां-

मान्यवर, विश्वनाथ प्रताप सिंह जी दो बार इस सदन के सदस्य रहे, एक बार परिषद् के सदस्य रहे और चार बार मेम्बर आफ पार्लियामेंट रहे। वह 1980 से 82 तक इस प्रदेश के मुख्य मंत्री भी रहे और फिर 1989 से 1990 तक देश के प्रधान मंत्री रहे। यह उनकी उपलब्धियां हैं। उन्होंने काफी पहले वर्ष 1957 में भूदान में अपनी काफी बड़ी जमीन दान में दे दी थी और भूदान आन्दोलन में सक्रिय रहे इससे उनके व्यक्तित्व का अंदाजा लगा सकते हैं। वह एक सच्चे सिपाही थे। उनके निधन से प्रदेश को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति मुश्किल है। मैं चाहूंगा कि मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनायें उनकी दुःखी परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री आर0के0 चौधरी-

माननीय अध्यक्ष जी, राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के निधन से पूरे देश में शोक की एक लहर है। वह उत्तर प्रदेश की विधान परिषद् में भी रहे और विधान सभा में भी रहे थे। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री के पद पर, भारत के प्रधान मंत्री के पद पर रहकर जनता की जो सेवा की है उसे भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने देश के पिछड़े वर्ग को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये जो अद्भुत और अहम् फैसले किये हैं उसको पूरा देश याद करता है। मान्यवर, सेवा काल से जीवन के अन्तिम समय तक राजनीति में वह सक्रिय रहे उनकी सेवाओं को पूरा देश भुला नहीं सकेगा। मैं अपनी संवेदना माननीय नेता सदन और अन्य दलीय नेताओं की संवेदना से जोड़ते हुए आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी शोक-संवेदना उनके दुखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष-

देश के पूर्व प्रधान मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का 27 नवम्बर, 2008 को निधन हो गया। वे लगभग 77 वर्ष के थे। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का जन्म 25 जून, 1931 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने बी0ए0, बी0एस0सी0 तथा एल0एल0बी0 की शिक्षा ग्रहण की थी। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह वर्ष 1969 में निर्वाचन क्षेत्र सोरांव, जिला इलाहाबाद से कांग्रेस के टिकट पर तथा जून, 1981 में उप-निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र तिन्दवारी, जिला बांदा से कांग्रेस (आई) के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे पांचवीं, सातवीं, नौवीं तथा दसवीं लोक सभा के सदस्य थे। वे नवम्बर, 1980 से जून, 1981 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के तथा 23-7-1983 से 2-4-1988 तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे थे।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने छात्र जीवन से ही राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। वे उदय प्रताप कालेज, वाराणसी के छात्र संघ के अध्यक्ष तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ के उपाध्यक्ष रह चुके थे। वे धारा 144 के उल्लंघन के फलस्वरूप नैनी जेल, जिला इलाहाबाद में लगभग एक मास तक राजनीतिक बन्दी रहे थे। वे 9 जून, 1980 से 18 जुलाई, 1982 तक प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे। उन्होंने केन्द्रीय मंत्रि-मण्डल में कई महत्वपूर्ण विभागों का कार्यभार संभाला था तथा 2 दिसम्बर, 1989 से 10 नवम्बर, 1990 तक देश के प्रधान मंत्री रहे। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा गोपाल विद्यालय इण्टरमीडिएट कालेज, कोरांव, इलाहाबाद की स्थापना की गई थी तथा वर्ष 1957 में उन्होंने सर्वोदय संस्था को अपने "पसना" नामक गांव के फार्म को भू-दान में दे दिया था। उन्होंने जन चेतना मंत्र, किसान मंच तथा जनमोर्चा की स्थापना की थी। उन्होंने सेवरल सोलो एण्ड ग्रुप सोज नामक पेन्टिंग भी बनाई थी तथा 'एक टुकड़ा धरती एक टुकड़ा आकाश' नामक हिन्दी कविता की भी रचना की थी। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निधन से देश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

अभी माननीय नेता सदन, माननीय नेता समाजवादी पार्टी, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता कांग्रेस, माननीय नेता लोकदल, माननीय नेता स्वाभिमान पार्टी ने जो शोक

संवेदनायें श्रीमती अर्चना सरोज, श्री आर0 वेंकटरामन, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रति व्यक्त की है मैं उनकी शोक-संवेदनायें मृतकों के दुःखी परिवार तक पहुंचा दूंगा।

अब मैं अनुरोध करता हूं कि कृपया अपने स्थान पर खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण करें।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये सभी सदस्य दो मिनट मौन ख़ड़े हुए।)

कृपया स्थान ग्रहण करें।

अब हम उठते हैं कल 11.00 बजे पुनः मिलेंगे।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 11 बजकर 48 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ :
दिनांक 11 फरवरी, 2009

प्रदीप कुमार दुबे,
प्रमुख सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी0एस0यू0पी0-एल0 02 विधान सभा (03)-01-4-09-813 प्रतियां (कम्प्यूटर/आफसेट)।